891.238
P97M.
618

SPS
891.238 P 97 M
6318

Tutra Granthi
~~stotra~~
Prafs
~~Tutra~~
Sastra
No: 4

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by

cat- 20220.
25-02-13

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6318. Price -/4/-
old: 3009

महिम्न स्तोत्र

गंधर्वों के राजा पुष्पदंताचार्य का बनाया हुआ श्रीगौरी शंकर जी की प्रसिद्ध स्तुति है इस स्तुति को बना कर पुष्पदंताचार्य गुरु के क्रोध से उद्धार होकर मुक्ति को प्राप्त हुआ यह स्तोत्र शीघ्र फल दायक है और महादेव जी को अति प्यारा है दीक्षा और दान, तप, तीर्थ, होम, यज्ञ का सोलह गुना फल इसके नित्य पाठ करने से होता है

भक्ति अनुराग के निमित्त अर्थ सहित

दूसरी मरतबा

लाला जैदयाल एजन्ट दिहली की फ़रमायश से
मुन्शी नवलकिशोर के यंत्रालय में छपा॥

वैशाख संवत् १९३६

[…]NDIR LIBRAR[…] No. 3009 JAMMOO

مہمن استوتر

گندھربون کے راجہ پُشپ دنتاچارج کا بنایا ہوا ہی مشہور و معروف استت سری گوری شنکرجی کی ہے اس آچارج نے اس استت کو بناکر اپنے گُرو کے سراپ سی نجات پاکر مُکت پدارتھ کو حاصل کیا یہ استوتر جلد پھل دایک در مہا دیوجی کو بہت پیارا ہی دکشا اور دان بت تیرتھ ہوم جگ کا سولہ گنا پھل اسکے روز روز پاٹھ کرنے سے ہوتاہی+

چنانچہ بھگت انراگ کے نمت ارتھ سہت فارسی و دیوناگری حرفون مین

دوسری مرتبہ

حسب فرمائش وتحریک صاحب فہم و فراست لالہ جیدیال ایجنٹ کوٹھی دہلی شاخ مطبع ہذا کے

مطبع منشی نول کشور مقام لکھنؤ مین چھپا

ماہ اپریل ۱۸۷۹ع

PRATAP […] SRINAGAR
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः

अथमहिम्नसटीकलिख्यते

मूल ॥ महिम्नःपारन्तेपरमविदुषोयद्यसदृशीःस्तुतिर्ब्रह्मादीनामपितदवसन्नास्त्वयिगिरः अथावाच्यःसर्वस्वमतिपरिणामावधिगृणन्ममाप्येषस्तोत्रेहरनिरपवादःपरिकरः ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्पदंताचार्यस्तुति करते हैं ॥ हे महादेव तुम्हारी महिमा केजो पार को न जानै उसकी स्तुतिजो तुम्हारे पसन्द के माफिक न हो तो ब्रह्मादिकों ने तुम्हारी जो स्तुति करी है वह भी तुम्हारे नापसन्द हो जावैगी क्योंकि स्तुति नाम है गुणों का कहना। तुम्हारे गुणों के पार को मैंभी नहीं जानता हूं और ब्रह्मादिक भी नहीं जानते हैं जो उनकीस्तुति आपने पसन्द करी तो मेरी भी स्तुति पसन्द कीजिये मैं और वे गुणोंके जान्ने में बराबर हूं इस वास्ते स्तुति करने वाले अपनी २ मति के प्रमाण के अनुसार सभी अच्छे हैं

ہری گیتایمنہ

ہری مہمن بھاکھا ٹیکا سہت

اشلوک

مہمنہ پارنتے پرم ودشو یدی سدرشی استتر برہما دینام اپی تدوسناستو یی گرہ اتھا واچیہ سروا سومت پرنا ماودھی گرننگ ممابییش ستوترے ہرنرپواد پرکرہ ۔

اشلوک کا ٹیکا

پشپ دنتا چارج استت کرتے ہیں کہ ہے مہادیو تمہاری مہما کے جو پار کو نجانے اوسکی استت جو تمہاری پسند کے موافق نہو تو برہما دکون نے جو تمہاری استت کی ہے وہ بھی تمہارے ناپسند ہو جاوے گی کیونکہ استت نام ہے گنون کا کہنا تمہارے گنون کے پار کو مین بھی نہین جانتا ہون اور برہمادک بھی نہین جانتے ہین جو اون کی استت آپ نے پسند کی ہے تو میری بھی استت پسند کیجیے مین اور وے گنون کے جاننے مین برابر ہون اسواسطے استت کرنے والے اپنی اپنی مت کے پرمان کے انسار سبھی اچھے ہین میرا جو جتن ہے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेराजोयत्न है आपकी स्तुति करने
केवास्ते अच्छा है और जितने स्तुति
करनेवाले हैं अपनी बुद्धि के माफि-
क सभी अच्छे हैं ॥ १ ॥ ॥ मू ॥
अतीतःपंथानं तव च महि-
मा वाङ्मनसयो रतद्व्यावृ-
त्यायंचकितमभिधत्ते श्रु-
तिरपि । सकस्य स्तोतव्यः
कतिविधगुणः कस्य वि-
षयः पदेत्वर्वाचीने पत
तिनमनः कस्य न वचः २
टी ॥ हे शिव तुम्हारी जो महिमा
है सो वाणी और मन से भी परे
है जो कहो कि जो वाणी और मनसे
परे है तो वेद कैसे गावता है तो यह
समझो कि वेद जो है संसार को हटाव-
ता हुआ डरता २ युक्ति से कहता है
वेद भी गुण जिन के नहीं कह सक्ता है

اُنکی استت کرنیکے واسطے اچھا ہے اور جتنے استت
کرنیوالے ہیں اپنی اپنی بدّھ کی موافق سبھی اچھے ہیں

اشلوک

۲
اَتی تہ پنتھا نگ تو چ مہما بانگ
منسیو رتدیا برتّیا یگ چکت مبھ
دھتّے شرت رپ - سکس
استو تبیہ کت بدھ گن کسیہ
بکھیہ پدے تُور با چینے پت
تمنہ کسیہ نہ بچہ -

ٹیکا

۲
ہے شو تمہاری جو مہما ہے سو بانی اور من
سے بھی پرے ہے اگر اعتراض کرو کہ جو بانی اور
من سے پرے ہے تو بید کیسے گاتا ہے تو
یہ سمجھو کہ بید جو ہے سنسار کو ہٹاتا ہوا ڈرتا
ڈرتا جگت سے کہتا ہے بید بھی گن جن
کے نہیں کہہ سکتا ہے اون کی استت

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उनकी स्तुति कौन कर सकै है और
कितनी तरह के गुण उनमें हैं यह कौन क
ह सक्ता है और उनमें किसकी इंद्रिय पहुं
च सक्ती है अर्थात किसी की नहीं पहुं-
च सकी है इसवास्ते क्या मालूम होता
है कि वेद जो कहता है ऊपर से जो ए
क बात मिली उसको बताता है ॥२॥

मू॥ मधुस्फीता वाचः परम
ममृतं निर्मितवतस्तव ब्र
ह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्वि
स्मयपदं ममत्वेतां वाणीं
गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथ-
न बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

टी॥ हे महादेव निर्मल और बहुत परम
अमृत रूप जो वेद रूप वाणी है उसके प्र-
कट करने वाले जो तुम तुम्हारे अगाड़ी
ब्रह्मा की वाणी क्या कुछ आश्चर्य रूप
है अर्थात कुछ आश्चर्य रूप नहीं क्योंकि
जिन्होंने खास वेद को प्रकट किया उ
नके आगे ब्रह्मा की वाणी क्या आश्चर्य हो
गी क्योंकि सूर्य के अगाड़ी दीपक अच
रज नहीं है जो कोई कहै कि ब्रह्मा

کون کرسکتا ہے اور کتنے طرح کے گن
اونمیں ہیں یہ کون کہہ سکتا ہے اور اونمیں
کسکی اندری پہونچ سکتی ہے یعنی کسی
کی نہیں پہونچ سکتی ہے اسواسطے
کیا معلوم ہوتا ہے کہ بید جو کہتا ہے اوپر
سے جو ایک بات ملی اوسکو بتاتا ہے

اشلوک ۳

مدھس پھیتاہ باچہ پرمم مرتنگ
نرمت وتہ استو برہمن کمباگپ سر
گرورو بسمے پدنگ ۔ ممتوی تانگ
بانیناگ گن کتھن پنین بھوتہ پنامی
تیرتھے اسمن پرمتھن بدھر بوستا

ٹیکا ۳

ہے مہادیو نرمل اور بہت پرم امرت روپ
جو بید روپ بانی ہے اوسکے پرگھٹ کرنے
والے جو تم سو تمھارے آگے برہما کی بانی
کیا کچھہ اچرج روپ ہے یعنی کچھہ اچرج روپ
نہیں کیونکہ جنھوں نے خاص بید کو پرگھٹ
کیا اونکے آگے برہما کی بانی کیا اچرج
ہوگی کیونکہ سورج کے آگے دیپک
اچرج نہیں ہے اگر کوئی اعتراض
کرے کہ برہما کی بانی تو شیوجی کے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की तो वाणी शिव जी के आगे आश्चर्य
नहीं तू जो शिवजी की स्तुति करता है
तेरी वाणी आश्चर्य रूप कैसे होगी इसवा
स्ते मैं कहता हूं कि मेरी तो बुद्धि यह बात
कहती है कि शिवजी के गुणों को वर्णन
करके अपनी वाणी को पवित्र करता हूं हे
पुरमथन इसवास्ते मेरा भी स्तुति क
रना उचित है ॥ ३ ॥ मू ॥ तवै-
श्वर्यं यज्जगदुदयरक्षाप्र-
लयकृत त्रयीवस्तु व्यस्तं
तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रम
णीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रो
शीं विदधत इहैके जडधियः
॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥-॥
टी ॥ हे महादेव तुम्हारा जो प्रताप है
सो जगत को रचता है और जगत की
रक्षा करता है और चारों वेदों का धन है
और तीन जो मूर्ति ब्रह्मा विष्णु महे-
श की हैं तीनों में झलक रहा है ऐसा
तुम्हारा प्रताप है हे महादेव क-
र्म शास्त्र वाले जो हैं जड बुद्धि वा-
ले हैं सो वे देवताओं की तारीफ़

آسکے اچرج نہین تو شیوجی کی استت
کرتا ہے تیری بانی اچرج روپ کیسے
ہوگی اسواسطے مین کہتا ہون کہ میری تو بدہ
یہ بات کہتی ہے کہ شیوجی کے گنون کو برن کرکے
اپنی بانی کو پوتر کرتا ہون ہے پرمتھن اسواسطے
میرا بھی استت کرنا مناسب ہے ۔ ۴

اشلوک

توَیشورینگ یت تجگ ددی رچھا
پرلے کرت تری لبست بیستگ تسر
گنن بھنّا سوتنکہہ ۔ ابھبیانا مسمن
بردرمنی یا مرمنی بہنگ تنگ بیاکرو
شینگ بدہت اہی کے جرد ھیہ

ٹیکا

ہے مہادیو تمہارا جو پرتاپ ہے سو جگت کو
رچتا ہے اور جگت کی رچھا کرتا ہے اور
جگت کا پالن کرتا ہے اور چاری بیدونکا
دھن ہے اور تین جو مورت برہما بشن مہیشر
کی ہین تینون مین جھلک رہا ہے ایسا
تمہارا پرتاپ ہے ہے مہادیو کرم شاستر
والے جو ہین جڑبدھ والے ہین سو وہ
دیوتاؤن کی تعریف کی برائی کرتے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

की बुराई करते हैं सो वह जो बुराई है उनके माड़े कर्मों से बुरी भी हैं परउनको अच्छी लगती हैं ॥ ४ ॥ ४ ॥

मू ॥ किमीहः किंकायः सखलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

टी ॥ सो जो महादेव हैं त्रिभुवन को रचै हैं सो क्या उनकी चेष्टा है और कैसी उनकी काया है और कैसा उनका उपाय है और क्या उनका आसरा है हे महादेव तुम्हारा जो प्रताप है सो तर्कना अर्थात् कहने के योग्य नहीं उसमें यह तर्कना उठाते हैं सो यह जो तर्कना है जो कोई मंद बुद्धि हैं तिनको मोहित करती है अर्थात भरमाती है जो अच्छे लोग हैं वह नहीं भरमते हैं ॥ ५ ॥ मू ॥ अजन्मानो लोकाः किमवयववंतोपि जगता मधिष्ठातारं किं

برائی کرتی ہین سو وہ جو برائی کرتی ہین اونکے مارے کرمون سے بری بھی ہین پر اونکو اچھی لگتی ہین

اشلوک

۵ کمی ہہ کنگ کایہ سکھل کم پایستر بھونگ کما دھارو دھاتا سرجت کمپادان اتچ - اترکی شور جیتو ینن وہترد ہ استھوہت دھیہ کترکونیگ کاشچن مکھہ ریت موہا جگتہ -

ٹیکا

سو جو مہادیو ہین تربھون کو رچے ہین سو کیا اونکی چیشٹا ہے اور کیسی اونکی کایا ہے اور کیسا اونکا اوپاو ہے اور کیا اونکا آسرا ہے ہے مہادیو تمھارا جو پرتاپ ہے سو ترکنا یعنی تقریر کے لایق نہین اوسمین یہ ترکنا اوٹھاتے ہین سو یہ جو ترکنا ہے جو کوئی مندبدھ ہین تنکو موہت کرتی ہے یعنی بھرماوتی ہے جو اچھے لوگ ہین وہ نہین بھرمتے ہین -

اشلوک

۶ اجنما نو لوگا کمو ویو ونتو پجگتا مدھشٹھا تارنگ کنگ بھوبدھ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भवविधिरनाहृत्यभवति
। अनीशो वा कुर्याद्भुवनज
ननेकः परिकरो यतो मंदा-
स्त्वां प्रत्यमरवर संशेरतइ
मे ॥६॥ टी॥ हे महादेव ये जो
चौदह भुवन हैं क्या पैदा नहीं हुए
अर्थात पैदा हुए हैं क्या इन की पै-
दायश तुम्हारे बिना है अर्थात तु
म्ही से है क्या कोई आदमी अनीश
कर सक्ता है जगत को अर्थात ई-
श्वर ही कर सक्ता है और जो कोई
तुम मे संशय करते हैं कि पैदायश
किसी और ने करदी होगी सो वे वडे
मूर्ख हैं क्योंकि यह सब तुम्हारी
ही पैदा की हुई हैं ॥ ६ ॥ (मू)
त्रयीसांख्यं योगः पशुपति
मतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने
प्रस्थाने परमिदमदः प-
थ्यमिति च रुचीनां वैचि
त्र्यादृजुकुटिलनानापथ
युषांनृणामेको गम्यस्त्व
मसि पयसामर्णव इव ७
टी॥ हे महादेव तीनों तो वेद और

زنادرتیہ بھوت - انی شوباکرئم
بھون جن نیکھہ پرکرو - یتو مندا
ستوانگ پرتیہ مرور سنشیے رت اِمے

ٹیکا

ہے مہادیو یہ جو چودہ بھون ہین کیا پیدا نہین
ہوئے یعنی پیدا ہوئے ہین کیا انکی پیدائش
تمھارے بنا ہے یعنی تمھارے ہی سے
ہے کیا کوئی آدمی انیش پیدا کرسکتا ہے
جگت کو یعنی ایشر ہی کرسکتا ہے اور جو کوئی
تم مین سنسے کرتے ہین کہ یہ پیدائش کسی اور
نے کی ہوگی سو وہ بڑے مورکھ ہین کیونکہ
یہ سب تمھاری ہی پیدا کئی ہوئی ہے -

اشلوک

تری سانکھیاگ جوگہ پشپتی
بیشنومت پربھنے پرستھانی پرمدمدہ
پتھیہ متیچ - رچی ناںگ نی جیتر یادرتج
کٹل نانا پتھہ جکھا مگ نرنامیکو گمیتہ
استومسی پیسا مرنو او

ٹیکا

ہے مہادیو تینون تو بید اور رگ کرت پرش
کا نرنے جسمین ہے ایسا سانکھیہ شاستر

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रकृतिपुरुष का निर्णय जिसमें है
ऐसा सांख्यशास्त्र और योगशास्त्र जि
समें योगाभ्यास है वह शास्त्र और रु
द्रयामल आदि अर्थात शिवजी का
मत और नारदपंचरात्र अर्थात वि-
ष्णु का शास्त्र ये जो जुदे जुदे शास्त्र हैं
इनके बीच में अपने २ को अच्छा
बताते हैं अनेक प्रकार की रुचि है
इसवास्ते सूधे और टेढ़े रास्ते वाले
बहुत हैं परंतु ये सब तुम्हीं में पहुंचेंगे
कोई सूधे रास्ते से कोई टेढ़े रास्ते से
जैसे जितने जल हैं सब समुद्र ही में
पहुंचते हैं कोई जल सूधे रास्ते को को
ई जल टेढ़े रास्ते को जाते हैं गंगा और
नर्मदा सूधे रास्ते होकर समुद्र में मि
ल जाती हैं और जो नदी है वह टेढ़े
रास्ते हो गंगा यमुना में मिलकर वे भी
समुद्र में मिल जाती हैं जो कि केव-
ल आप ही का ध्यान करते हैं वे आप
के पास पहुंच जाते हैं जो कोई और देव
ताओं का ध्यान करते हैं वे सब तुम
में और जन्म धार के पहुंचते हैं। ७।

मू॥ महोक्षः खट्वांगं पर
शुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तं

جسمیں جوگ ابھیاس ہے وہ شاستر اور
رُدّر جامل وغیرہ یعنی شیو جی کا مت اور
نارد پنچ راتر یعنی بشن کا شاستر یہ جدا جدا
شاستر ہیں لیکن بیچ میں اپنے اپنے کو اچھا
بتاتے ہیں انیک پرکار کی رُچ ہے اسواسطے
سیدھے اور ٹیڑھے راستے والے بہت ہیں
مگر یہ سب پہونچینگے تمہیں میں کوئی سیدھے
راستہ سے کوئی ٹیڑھے راستہ سے جیسے
جتنے جل ہیں سب سمندر ہی میں پہونچتے
ہیں کوئی جل سیدھے راستہ کو کوئی جل
ٹیڑھے راستہ کو جاتے ہیں گنگا اور
نرمدا سیدھے راستہ سے جاکر سمندر
میں مل جاتی ہیں اور اور جو ندی ہیں وہ
ٹیڑھے راستہ سے گنگا جمنا میں شامل
ہوکر وہ بھی سمندر میں مل جاتی ہیں جو کہ
صرف آپکا ہی دھیان کرتے ہیں وہ آپکے
پاس پہونچ جاتی ہیں جو کوئی اور دیوتاؤنکا دھیان
کرتی ہیں وہ تم میں اور جنم دھارکے پہونچتی ہیں

اشلوک

مہوکشہ کھٹوانگ پرشو جنک
بھسم پھنینہ کپالنگ چیتی یت تو

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऽोपकरणं सुरास्तांतामृद्धि
विदधतिभवद्भ्रूप्रणिहितां ।
नहिस्वात्मारामंविषयमृग
तृष्णाभ्रमयति ॥८॥ टी ।
हेमहादेव बड़ा तो बैलऔरखट्वां-
गनाम हथियार जैसा आदमी के
हाडों का पिंजर ऐसा हथियार हो
ता है और परशुनाम कुल्हाड़ा और
अजिन नाम मृगछाला और भस्म
नाम भभूत और फणि नाम सर्प
और कपाल है हे वरद तुम्हारी इ-
तनी तो सामग्री है और आप की
दी हुई दौलत को सब देवता व-
रतते हैं यह आप का प्रताप
है कि सामग्री आप की गरीबों
की सी और देना आप का
अनन्त है ॥ ८ ॥ ॥ मू ॥
ध्रुवंकश्चित्सर्वंसकलम-
परस्त्वध्रुवमिदं परोध्रौ
व्याध्रौव्येजगतिगदति-
व्यस्तविषये समस्तेप्ये
तस्मिन्पुरमथनतैर्वि-
स्मितइवस्तुवन् जिह्रे-

برد تنتر وپ کرننگ ۔ سُرا ستا متا
مرِدھہاں بدھ وھت بجو وکھو بر
نہتا نگ نہتسو اتما رامنگ بشئے
مرگ ترشنا بھرمیت ۔

ٹیکا

٨
ہے مہادیو بڑا تو بیل اور کھٹوانگ نام
ہتھیار جیسا آدمی کے ہاڑون کا پنجر
ایسا ہتھیار ہوتا ہے اور پرسو نام کُہاڑا
اور اجن نام مرگ چھالا اور نام بھسم
نام بھبھوت اور پھنی نام سرپ اور
کپال ہے ہے برد تمھاری اتنی تو ساگری
ہے اور آپ کی دولت کو سب دیوتا برتتے
ہین یہ آپکا پرتاپ ہے کہ ساگری آپ
کی غریبون کی ایسی اور دینا آپ کا بے
انتہا ہے ۔

اشلوک

٩
دھرونگ کشچت سرّبم سکلم پرستو
دھرو مدنگ پرو دھرو بیادھیر و بیے
جگت گدت بیست بشیے سمستے پی تسمن
پرمتھن تیر بسمت او ستوون جھرے
ستوانگ نگمھل نو درشٹا مکھ رتا ۔

मित्वांनखलुननुधृष्टामु
खरता ॥ ६ ॥ ॥ टी ॥

हेशांवशिव कोई तो इसजगत को कहता है कि ध्रुव है अर्थात सत्य है और कोई कहता है कि अध्रुव है अर्थात झूठा है और कोई कहता है कि ध्रुव अध्रुव दोनो है अर्थात यह संसार सत्य भी है और झूठभी है सो इन सब कहने वालों की बात को सुन करके वडा आश्चर्य मानता हूं क्योंकि कोई कुछ कहता है और कोई कुछ सो हे शिव तुम्हारी स्तुति करता हुआ मैं लज्जा को प्राप्त होता हूं क्योंकि मैं तुम्हारी क्या स्तुति करूंगा जो ये वडे वड़े कहने वाले हैं उन्हों ने तो पार पाया ही नहीं मैं तो महा तुच्छ हूं क्या पार पाऊंगा मैं जो स्तुति करता हूं एक ढिठाई सी करता हूं ढीठ वह होता है कि छटांक होवे और सेर की रीस करने लगे ॥ ६ ॥

मू ॥ तवैश्वर्यंयत्नाद्यदु
परिविरंचोहरिरधः प
रिच्छेतुंयाता वनलमनि

ٹیکا

۶

ہے شانب شیو کوئی تو اس جگت کو کہتا ہے کہ دُھرو ہے یعنی سَتّ ہے اور کوئی یہ کہتا ہے کہ اَدُھرو ہے یعنی جھوٹھا ہے اور کوئی یہ کہتا ہے کہ دُھرو اَدُھرو دونوں ہیں یعنی یہ سنسار سَتّ بھی ہے اور جھوٹھ بھی ہے سو ان سب کہنے والونکی بات کو سُنکر بڑا اشچرج مانتا ہوں کیونکہ کوئی کچھ کہتا ہے اور کوئی کچھ سو ہے شیو تمہاری اُستت کرتا ہوا میں لجّا کو پراپت ہوتا ہوں کیونکہ میں تمہاری اُستت کیا کرونگا جو یہ بڑے کہنے والے ہیں اونھوں نے تو پار پایا ہی نہیں میں تو ناچیز ہوں کیا پار پاؤنگا میں جو اُستت کرتا ہوں ایک گستاخی سی کرتا ہوں ڈھیٹھ وہ ہوتا ہے کہ چھٹانک بھر ہو اور سیر بھر والے کی ریس کرنے لگے —

اشلوک

تَوَے شرینگ یتنادُپَرِ برنچو ہر
ردھ - پرِکشیتُنگ یاتاوَنَل مَنَل

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लस्कंधवपुष: ततोभ-
क्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां
गिरिशयत् स्वयंतस्थैता
भ्यांतवकिमनुवृत्तिर्न
फलति ॥१०॥ ॥टी॥:॥

हे महादेव तुम्हारे ऐश्वर्य अर्थात
प्रताप को तौलने के वास्ते वडे वडे
यत्न करके ब्रह्मा तो ऊपर गये औ-
र विष्णु नीचे गये तौभी उसका अं-
त न पाया तिस के वास्ते श्रद्धा क-
र के तुम्हारी स्तुति करने वाले
जो हरि और ब्रह्मा हैं उनके वा-
स्ते तुम आप प्रकट होते भये
अर्थात दर्शन देते भये हे शिव
तुम्हारी जो अनुवृत्ति नाम से-
वा है क्या नहीं फलती अर्था-
त फलती है ॥१०॥ मू॥ अ-
यत्नादासाद्यत्रिभुवनमवै-
रव्यतिकरं दशास्योयद्बाहू-
नभृतरणकंडूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचित
चरणांभोरुहबलेः स्थिरा
यास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर

اسکندھ ہو سہ ۔ تتو بھکت شردھا
بھر گرو گرند بھیانگ گرسیت سو
نیاک لتستھے تابھیانگ توک من
برتر نہ پھلت ۔

ٹیکا

ہے مہادیو تمھارے ایشورج کے تولنے
کے واسطے بڑے بڑے جتن کرکے برہما تو
اوپر گئے اور بشن نیچے گئے تو بھی اوسکا
انت نہ پایا تنکے واسطے سردھا کرکے
تمھاری استت کرنیوالے جو ہر اور برہما
ہیں اونکے واسطے تم آپ پرگھٹ ہوتے
بھئے یعنی درشن دیتے بھئے شیو تمھارے
جو انبرتی نام سیوا ہے کیا نہیں پھلتی ہے
یعنی پھلتی ہے

اشلوک

اینتنا داسا دلیس ترکھون مبے
ریتیت کرنگ دشاستو یدواہو
بھرتن کنڈو پرلیشان ۔ شرہ
پدم شرنی رچیت چرناںگ بھوہ
بلکیہ استھرایاستو دبھکتے استر
پرہرلبس پھورجیت مدناگ ۔

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विस्फूर्जितमिदं ॥ ११ ॥
टी ॥ हे महादेव दशानन जो रावण है जिस में बैरी एक नहीं ऐसा जो त्रिलोकी का राज है उस को प्राप्त हो कर के और जो हमेशा युद्ध करा चाहै ऐसी बीस भुजा कि जिसमे हमेशा खाज लड़ाई की उठती रहै उन को प्राप्त होता भया और अपने जो शिर हैं उन को कमल बना करके नजर देता भया है शिव तुम्हारी भक्ति का फल खुला हुआ है क्योंकि देखिये कि रावण को कौन २ फल मिले ॥ ११ ॥ ११ ॥
मू ॥ अमुष्यत्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं बलात्कैलाशेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः अलभ्या पातालेप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः १२
टी ॥ हे महादेव तुम्हारी सेवा कर के पाया है भुजवन जिस ने

ٹیکا

۱۱ ہے مہادیو دسانن جو راون ہے جسمین بیری ایک نہین ایسا جو ترلوکی کا راج ہے اوسکو پراپت ہو کرکے اور جو ہمیشہ جدھ کرنا چاہین ایسی بیس ۲۰ بھجا کہ جس مین ہمیشہ کھاج لڑائی کی اوٹھتی رہے اونکو پراپت ہوتا بھیا اور اپنے جو سر ہین اونکو کمل بنا کر دیتا بھیا ہے شیو تمھاری بھکت کا پھل کھلا ہوا ہے کیونکہ دیکھیے راون کو کون کون پھل ملے —

اشلوک

۱۲ امشیہ توت سیوا سمدھگت سارنگ بھجبنگ بلات کیلاسے پیو ددھوستو بکرمیتہ السبھیا پاتالے پیلس چلیتا نگشٹ شرس پرتشٹھا تو یاسی دھروم پچتو موحیت کھلہ —

ٹیکا

۱۲ ہے مہادیو تمھاری سیوا کر کے پایا ہے بھج بل جسنے ایسا جو راون ہے اوسکی

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसा जो रावण है इसकी वडाई जो है पाताल में भी जाती रही क्योंकि तुम्हारे जो रहने की जगह है कैलाश है उस कैलाश के उखाडने के वास्ते उस की जड़ों में दे दिये हैं हाथ जिसने जब उस के हाथ देने से पर्वत हिलने लगा तब तुमने अपने दाहिने पैर का अंगूठा हिला दिया तभी उसकी भुजा वहां दब गई और जितने लोग पाताल के रहने वाले थे सब हंसने लगे और कहने लगे कि जो तुझसे हाथ अपने नहीं निकलते तो अपने हाथों को कैलाश पर्वत की जड़ों में क्यों दिया था इस तरह उस की शोभा पाताल में बिगड़ गई ॥ १२ ॥

मू॰ ॥ यद्दद्धिं सुत्रामणोवरद्दपरमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः नतच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्यु

بڑائی پاتال مین بھی جاتی رہی کیونکہ تمہارے جو رہنے کی جگہ کیلاس ہے اوس کیلاس کے اکھاڑنے کے واسطے اوسکی جڑون مین اپنے ہاتھ دیدیے اوسکے ہاتھ دینے سے جب پربت ہلنے لگا تب تمنے اپنے داہنے پانون کا انگوٹھا ہلا دیا جبھی اوسکی بھجا وہین دب گئی اور جتنے لوگ پاتال کے رہنے والے تھے سب ہنسنے لگے اور کہنے لگے کہ جو تجھ سے ہاتھ اپنے نہین نکل سکتے تو اپنے ہاتھون کو کیلاس پربت کی جڑون مین کیون دیے تھا اس طرح اوسکی سوبھا پاتال مین بگڑ گئی۔

اشلوک

۱۳

یدرّدھنگ سوترامنو بردپرمو

چیےرپ ستی مدھش چکرے

بانہ پرجن بدھیےتر بھونہ۔ نہ

تت چترنگ تسمن برلس ترتوت

چرنیونکسیاپیون ستیےبھوت بتر

त्यैभवति भिरसस्त्व
प्यवनतिः ॥१३॥

टी॥ हे महादेव निश्चय करके
जानते जो मनुष्य समर्थ वान्अ
र्थात् धनवान होकर अंधा
हो जाता है ॥१३॥

मू॥ अकांड ब्रह्मांड क्ष-
यचकित देवा सुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनय
नविषंसंहृतवतः स-
कल्माषःकंठे तव न कु
रुते न श्रियमहो विका-
रोपि श्लाघ्यो भुवनभ-
यभंगव्यसनिनः १४

टी॥ हे महादेव जहर के पीने
वाले जो तुम हो तुम्हारे कंठ में
जो सियाही होगई है क्या वह शो-
भा नहीं देती अर्थात् बहुत अच्छी
लगती है क्योंकि बिना समय प्र
लय भई थी उससे असुरों
और देवता दोनों डरे उनको तुम
ने बचाया इस वास्ते वह जो

سستو پیوتہ ۔

ٹیکا

١٣
ہے مہادیو نشچے کرکے جانتے جو شخص
سمرتھ وان یعنے دھن وان ہوکر اندھا
ہو جاتا ہے ۔

اشلوک ١٤

اکانڈ برہمانڈ کشیہ چکت دیوا سر
کرپا ودھے یسیا سید یستر نین گرگ
سنگ ہرت وتہ ۔ سکل ماکھہ
کنٹھے توَن کُرُتے نسریہ مہو بکاروپش
لاگھیو بھون بھے بھنگ بیسننہ

ٹیکا

١٤
ہے مہادیو زہر کے پینے والے جو تم ہو سو
تمہارے کنٹھ مین جو سیاہی ہو گئی
ہے کیا وہ سوبھا نہین دیتی نہیں بہت
اچھی لگتی ہے کیونکہ بنا سمے پرلے آئی
تھی اوس سے اسر اور دیوتا دونو
ڈرے سو اون کو تم نے بچایا
اسواسطے وہ جو سیاہی زہر کی ہے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सियाही जहर की है वह बहुत
ही शोभा दे रही है हे महादेव जो
पराये दुख को मिटाते हैं उन
का अवगुण भी गुण है ॥ १४॥

मू॥ असिद्धार्था नैव क्वचि
दपि सदेवासुर नरे निवर्त
न्ते नित्यं जगति जयिनो
यस्य विशिखाः स पश्य
न्नीश त्वामितर सुर सा
धारणमभूत् स्मरः स्म
र्तव्यात्मा न हि वशिषु प
थ्यः परिभवः ॥ १५॥

टी॥ हे महादेव जिस कामदेव
के बाण जगत् में खाली फिर के
नहीं आते सब को जीत कर आते
हैं सो कामदेव तुम को भी और
देवताओं के माफिक देखता हु
आ दग्ध हो गया हे महादेव अ
च्छे पुरुषों का आदर न करना
अच्छा नहीं जो आदर नहीं
करते हैं उन का हाल कामदेव
का सा होता है ॥ १५॥

मू॥ महीपादाघाताद्व्रज

وہ بہت ہی سوبھا دے رہی ہے ہے
مہادیو جو پرائے دکھ کو مٹاتے ہین انکا
اوگن بھی گن ہے۔

اشلوک

۱۵

اسدھارتھا نیو کوچدپی سدیواسر
نرے نورتنتے نتیہ جگت جینو یسی
وشکھاہ سپشینیش توام اتر سر
سادھارن مبھوت اسمرہ اسمرتب
یاتما نہ ہی وششو پتھیہ پربھوہ۔

ٹیکا

۱۵

ہے مہادیو جس کامدیو کے بان جگت
مین خالی پھر کے نہین آتے سبکو جیت کر
آتے ہین سو کامدیو تمکو بھی اور دیوتاؤن
کے موافق دیکھتا ہوا دگدھ یعنی سوختہ
ہو گیا ہے مہادیو اچھے پرشون کا آدر کرنا
اچھا نہین ہے جو آدر نہین کرتے ہین انکا
احوال کامدیو کا سا ہوتا ہے۔

اشلوک

مہی پاداگھاتا دبرجت سہسا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तिसहसा संशयपदं पदं
विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णा
ग्रहगणं मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं
यात्यनिभृतजटाताडि-
ततटा जगद्रक्षायै त्वं न
टसि ननु वामैव विभु-
ता ॥१६॥ ॥टी॥

हे महादेव तुम जो नृत्य करते हो सो जगत् के भले के वास्ते करते हो जगत तो और उलटा दुख पाता है कैसे कि पृथ्वी जो है सो पैरों की ठोकरों से दुख पाती है और आकाश जो है सो भुजाओं के फिराने से दुख पाता है और स्वर्ग लोक जो है वह जटाओं के लगने से दुख पाता है जो कोई यह शंका करै तो उसको यह कहना कि शिवजी के नाचने से जो त्रिलोकी को दुख हुआ तो क्या आश्चर्य है क्योंकि जो बादशाह की सवारी निकलने से जो किसी कुंजड़े का टोकरा गिर पड़ा या किसी की दीवार गिर गई या किसी सवार की टांग टूट गई या कोई घोड़ा या ऊंट या हाथी गिर

سنسیے پدنگ پدنگ بشنور بھرا بھیو
بھج پرگھ رگن گرہ گننگ مہور
دیوؤ دوستھنگ یاتینی بھرت جٹاتا
رت تٹا جگدرکشایی توںگ نٹس
ننو وامیو وبھوتا —

ٹیکا

۱۶

ہے مہادیو تم جو نرت کرتے ہو سو جگت کے بھلے کے واسطے کرتے ہو جگت تو اور اولٹا دکھ پاتا ہے کیونکہ پرتھی جو ہے سو پیرون کی ٹھوکرون سے دکھ پاتی ہے اور اسمان جو ہے سو بھجاؤن کے پھرانے سے دکھ پاتا ہے اور سرگ لوک جو ہین وہ جٹاؤن کے لگنے سے دکھ پاتے ہین اگر کوئی ایسا اعتراض کرے تو اوسکو یہ کہنا کہ شیوجی کے ناچنے سے اگر ترلوکی کو دکھ ہوا تو کیا اشچرج ہے کیونکہ اگر بادشاہ کی سواری نکلنے سے کسی کنجڑے کا ٹوکرا گر پڑا یا کسی کی دیوار گر گئی یا کسی سوار کی ٹانگ ٹوٹ گئی یا کوئی گھوڑا یا اونٹ یا ہاتھی گر کر

कर मर गया तो ऐसा कारखाने
वालों के अर्थात् जो सब से बड़े
होते हैं जो ऐसा नुकसान होगया
तो क्या इस बात का आश्चर्य है १६

मू ॥ वियद्व्यापी तारागण
गुणितफेनोद्गमरुचिः प्र
वाहो वारां यः पृषतलघु
दृष्टः शिरसि ते जगद्वी
पाकारं जलधिवलयं तेन
कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृ
तमहि दिव्यं तव वपुः
॥ १७ ॥ ॥ टीका ॥

हे महादेव जलों का जो प्रवाह गं
गाजी तुम्हारे सिर के ऊपर बूंद
से छोटा देखा सो कैसा प्रवाह कि
आकाश में व्याप्त हो रहा है फेर
कैसा है कि तारागण करके
मिले हुये जो फेन अर्थात् झाग
उस फेन करके है रुचि तुम्हारी
और फेर कैसा प्रवाह जिन कर
के जगत् दीपवाला होगया ति
स करके तुम्हारा जो शरीर है वड़ी
महिमा वाला है और बड़े प्रताप

مرگیا تو ایسے کارخانہ والون کے یعنی جو سب
سے بڑے ہوتے ہین جو ایسا نقصان
ہوگیا تو اسبات کا آسچرج کیا ہے ۔

١٧ اشلوک

بیدبیاپی تاراگن گنت پھینودگم
رچہ پرباہو بارانگ یہ پرشت
لگھو درشٹہ سرستے جگد دیپا
کارنگ جلدھ بلینتیتہ نکرت سیتے
تیہے دو نیئے یتاک دھرت مہہ
دبینگ توبپہ

١٧ ٹیکا

ہے مہادیو جلون کا جو پرواہ گنگاجی سو
تمھارے سر کے اوپر بوند سے بھی چھوٹا
دیکھا کیسا پرواہ کہ آکاس مین بیاپت
ہو رہا ہے پھر کیسا کہ تاراگن کرکے
ملی ہوئی جو پھین یعنی جھاگ اوس پھین
کرکے ہے رچ تمھاری اور پھر کیسا پرواہ کہ
جس کرکے جگت دیپ والا ہوگیا تس کر
کے تمھارا جو سریر ہے بڑی مہما والا ہے
اور بڑے پرتاپ والا ہے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाले हैं ॥ १७ ॥

मू ॥ रथः क्षोणी यंता शत
धृतिरगेंद्रो धनु रथोरथांग
चंद्रार्कौ रथचरण पाणिः
शरइति दिधक्षोस्तेको
यं त्रिपुरतृणमाडंबर वि
धिर्विधेयैः क्रीडंत्यो न ख
लु परतंत्राः प्रभुधियः १८

टी ॥ हे महादेव पृथ्वी को तुम ने रथ बनाया और हांकने वाला ब्रह्मा बनाया और हिमाचल पर्वत को धनुष बनाया और चंद्र सूर्य को रथ के पहिये बनाये और विष्णु को तीर बनाया त्रिपुर दैत्य घास के तिनके के बराबर उसके फूंकने के वास्ते इतनी बड़ी सामग्री वह तो केवल तुम्हारी दृष्टि मात्र से दग्ध हो सक्ता था परंतु बड़े लोग जो होते हैं उनकी खुशी में जो आता है सोई करते हैं ॥ १८ ॥

मू ॥ हरिस्ते साहस्रं क-
मलबलिमाधाय पदयो

اشلوک

۱۸ رتھا کشونی نیتا شت دھرتگیندرو
دھنر تھور تھانگے چندرارکو رتھ
چرن پانہ شرات ددھکشو ستے
کونیگ تریپر ترن ماڈمبر بد
ھیے گرہی وتیو نکھل پرتنترا پربھو
دھیہ

ٹیکا

۱۸ ہے مہادیو پرتھی کو تم نے تو رتھ بنایا اور ہانکنے والا برہما بنایا اور ہماچل کو دھنکھ بنایا اور چندرماں اور سورج کو رتھ کے پہیے بنایا اور بشن کو تیر بنایا تریپردیت گھاس کے تنکے کے برابر اوسکے پھونکنے کے واسطے اتنی بڑی ساگری وہ تو کیول تمھاری درشٹ ماتر سے دگدھ یعنی سوخت ہوسکتا تھا مگر خیر بڑے لوگ جو ہوتے ہیں اونکی خوشی میں جو آتا ہے سوئی کرتے ہیں۔

اشلوک

ہرستے ساہسترنگ کمل بلمادھا
یدیو ریدے کونے تسمن بنج مد

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यदेकोनेतस्मिन्निजमु-
दहरन्नेत्रकमलं गतोभ
क्त्युद्रेकः परिणतिमसौ
चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षा-
यै त्रिपुरहर जागर्ति जग
तां ॥ १९ ॥ ॥ टी ॥

हे महादेव विष्णु जो हैं तुमको हजार कमल रोज़ चढाया करते हैं उनकी परीक्षा लेने के वास्ते एक पुष्प को लेलिया क्योंकि देखें कि इन का नेम कैसा है तब विष्णु ने देखा कि हमारा हमेशा का नेम टूटा अब क्या करना चाहिये खैर अपना एक नेत्र ही चढा कर अपना नेम पूरा हजार कमल का करे देंगे तब यह विष्णु की बड़ी भक्ति को देख कर तुम ने त्रिलोकी की रक्षा करने के वास्ते सुदर्शन चक्र विष्णु को दिया सो वह जो चक्र है आज तक विष्णु के हाथ में वर्तमान है ॥ १९ ॥

मू॥ क्रतौसुप्ते जाग्रत्त्व
मसि फलयोगे क्रतुम-

ہرن نیتر کملنگ گتو بھکتیودریکہ
پرن متِسو چکر بپکھا تریانانگ رکشا
ینے ترپر ہر جاگرت جگتانگ -

ٹیکا

ہے مہادیو بشن جو ہیں تمکو ہزار کنول ہمیشہ چڑھایا کرتے ہیں اونکی پرکشا لینے کے واسطے تمنے ایک پشپ کو لے لیا کیونکہ دیکھیں کہ انکا نیم کیسا ہے تب بشن نے دیکھا کہ ہمارا ہمیشہ کا نیم ٹوٹا اب کیا کرنا چاہیے خیر اپنا ایک نیتر ہی چڑھا کر کے اپنا نیم پورا ہزار کنول کا کر دینگے تب یہ بشن کی بڑی بھاری بھگت کو دیکھ کر تم نے ترلوکی کی رچھا کرنے کے واسطے سودرشن چکر اونکو دیا سو وہ چکر آج تک بشن کے ہاتھ میں موجود ہے -

اشلوک

کرتو سپتے جاگرت تومس پھل جوگے
کرت متانگ کو کرم پردھو بشنانگ
پھلت پرشا رادھن مرتے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तांक्षकर्मप्रध्वस्तंफलति
पुरुषाराधनमृते अत-
स्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फ-
लदानप्रतिभुवंश्रुतौ
श्रद्धां बध्वा दृढ़परिकरः
कर्म्मसुजनः ॥ २० ॥

टी ॥ हे महादेव जब यज्ञ पूरा हो जाता है तब यज्ञ करने वालों को फल तुम्ही देते हो और तुम्हारी सेवा के बिना पूरा हो गया ऐसा जो कर्म है सो फल नहीं दे सक्ता इस वास्ते जितने कर्म करने वाले हैं तुम को देखकर कि शिवजी सब कर्मों के फल देने वाले वर्त्तमान बैठे हैं यह समझ कर सब कर्म करने को लग रहे हैं ॥ २० ॥

मू ॥ क्रियादक्षोदक्षः क्र-
तुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शर-
णदसदस्याः सुरगणाः
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्र-
तुषु फलदानव्यसन

اتستوانگ شو پرکشیہ کرتکھ
پھلدان پرت بھونگ سرو تو
سردھانگ بدھوا درھ پرکرہ کرم
سُجنہ

ٹیکا

ہے مہادیو جب جگ پورا ہو جاتا ہے تب جگ کرنے والوں کو پھل تم ہی دیتے ہو اور جو کرم تمھاری سیوا کے بنا پورا ہو گیا ہے وہ پھل نہیں دے سکتا اسواسطے جتنے کرم کرنیوالے ہیں تم کو یہ دیکھکر کہ شیوجی سب کرموں کے پھل دینے والے موجود بیٹھے ہیں یہ سمجھکر سب کرم کرنے کو لگ رہے ہیں

اشلوک

کریا دکشو دکشہ کرت پتر دھیشہ
استن بھرتا مرکھی نا مار توجیناگ
شرن دش دسیاہ سر گناہ
کرت بھرنگس استوہ کرش

निनोध्रुवं कर्तुः श्रद्धावि-
धुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥ ॥टी॥

हे महादेव यज्ञ करनेवाला तो दक्ष सो कैसा दक्ष कर्म करने में बड़ा बुद्धिमान यज्ञ कराने वाले सब ऋषीश्वर और यज्ञ के सहायक सब देवता परंतु उस दक्ष की तुम ही में श्रद्धा न थी इतनी ही कसर थी सो यज्ञ भ्रष्ट होगया उसके यहां सब कुछ था परंतु केवल तुम्हारी कृपा न थी उसका यज्ञ विध्वंस होगया क्योंकि यज्ञ के फल देने वाले तो तुम सो तुम्हीं में उसकी श्रद्धा न हो तो वह यज्ञ कहां से संपूर्ण हो यज्ञ करने वाला भी बहुत अच्छा था करवाने वाले भी बहुत अच्छे थे परंतु बिना कृपा तुम्हारी के कुछ किसी से न हो सका यज्ञ भ्रष्ट हो गया ।२१ मू ।

प्रजानाथं नाथ प्रसभम-
भिकं स्वां दुहितरं गतं रो-
हिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य
वपुषा धनुष्पाणेर्यातं
दिवमपि सपत्राकृतम-

پھلد اپتیہ سنئو دھرونگ کرتُھ شردھا
بدھُر مبھچارائے ہِمکھاہ -

ٹیکا

ہے مہادیو جگ کرنے والا تو دکش سو کیسا دکش کرم کرنے مین بڑا ہوشیار اور جگ کرانے والے سب رکھیشر اور جگ کے مددگار سب دیوتا مگر اوس دکش کی تمہی مین سردھا نہ تھی اتنی ہی کسر تھی اوسکی جگ بھرشٹ ہوگئی اوسکے یہان سب کچھ تھا لیکن صرف تمھاری کرپا نہ تھی اوسکی جگ بدھونس ہوگئی کیونکہ جگ کے پھل دینے والے تو تم سو تمھی مین اوسکی سردھا نہو تو وہ جگ کہان سے سمپورن ہو جگ کرنے والا بھی اچھا تھا اور جگ کرانے والے بھی بہت اچھے تھے لیکن تمھاری کرپا بنا کچھ کسی سے نہو سکا جگ بھرشٹ ہوگئی -

اشلوک

پرجا ناتھنگ ناتھ پرسبھ مبھ
کنگ سواں دُہترنگ گتنگ روہد

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुं असंतं तेद्यापि त्यजति
न मृगव्याधरभसः ।२२।

टी॰। हे नाथ तुम्हारा जो वाण है ब्रह्मा को आज तक नहीं छोड़ता कैसा ब्रह्मा है कि अपने शरीर को त्याग कर और हिरन के शरीर को धारण करके आकाश में जा बैठा और फेर कैसा है कि कामदेव जिस को वाधा कर रहा है और फेर कैसा है कि अपनी जो वेटी है उस के साथ रमण करने की इच्छा है जिस की कैसी वेटी है कि वास्ते बचने के हिरन का स्वरूप को धार लिया है जिसने और ब्रह्मा भी कैसा है कि उस के साथ रमण करने को हिरन हो गया और कहने लगा कि जो तू हिरनी हो गई है तो मैं भी हिरन हो कर तुझ को प्राप्त हो जाऊंगा ऐसी इच्छा है जिसकी तब हिरनी आकाश की ओर देख कर कहने लगी कि कोई ऊपर है या नहीं हे नाथ तुम कैसे हो कि धनुष हाथ में जिनके ब्रह्मा कैसा है कि महादेव का तीर

یتھو یاگت سرہیس مرگیتسیہ ...کھ
دھنگھا نیر یاتگنٹ دیوم پتیتھا
کرت ممنگ ترسنگ تنگ نیڈ یا یب
یتجت نمرگیا دھرتیسہ

ٹیکا

ہے ناتھ تمھارا جو بان ہے برہما کو آج تک نہیں چھوڑتا کیسا برہما ہے کہ اپنے سریر کو تیاگ کرکے اور ہرن کے سریر کو دھارن کرکے آسمان مین جا بیٹھا اور پھر کیسا ہے کہ کام جسکو بادھا کر رہا ہے اور پھر کیسا ہے کہ اپنی جو بیٹی ہے اوسکے ساتھ رمن کرنیکی اچھا کرتا ہے جسکی بیٹی کیسی ہے کہ واسطے بچنے اپنے کے ہرنی کا سوروپ دھار لیا ہے اور برہما بھی کیسا ہے کہ اوسکے ساتھ رمن کرنیکو ہرن ہو گیا اور کہنے لگا کہ جو تو ہرنی ہو گئی ہے تو مین بھی ہرن ہو کر تجھکو پراپت ہو جاؤنگا ایسی اچھا ہے جسکی تب ہرنی آسمان کی طرف دیکھکے کہنے لگی کہ کوئی اوپر ہے یا نہیں ہے ناتھ تم کیسے ہو کہ دھنکھ ہے ہاتھ مین جنکے برہما کیسا ہے کہ مہادیو کا تیر ایسے

6318
CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे खोटे कर्म की इच्छा से जिस
के बदन को फोड़ कर साफ निक-
ल गया और फेर कैसा है कि त्रास
को प्राप्त हो रहा है तौभी तुम्हारा बा-
ण आज तक उसके पीछे लग रहा
है हे महादेव ब्रह्मा को तो आज त-
क तुम ऐसे नजर आते हौ कि मानौ
शिवजी मेरे पीछे तीर लिये खड़े हैं
सो हे शिव संध्या नाम करके ब्रह्मा
की जो बेटी है उसकी फरयाद
तुमने सुनकर यह सजा ब्रह्मा
को दी ॥ २२ ॥ ॥ मू ॥

स्वलावण्याशंसाधृत
धनुषमन्हाय तृणवत
पुरःप्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन
पुष्पायुधमपि यदिस्त्रै-
णं देवी यमनिरत देहार्द्धघ
टनादवैति त्वामद्धा वतव
रदमुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

टी ॥ हे महादेव देवी जो पार्वती हैं
तुमको आधे अंग में बैठाने से य-
ह जानती हैं कि शिवजी कामी

کھوٹے کرم کی اچھا سے اوسکے بدن کو توڑ کر
صاف نکل گیا اور پھر کیسا ہے کہ تراس کو پراپت
ہو رہا ہے تو بھی تمھارا بان آج تک اوسکے پیچھے
لگ رہا ہے مہادیو برہما کو تو آج تک تم ایسے
نظر آتے ہو کہ گویا شیوجی اوسکے پیچھے تیر لیے
کھڑے ہیں سو ہے شیو سندھیا نام کر
جو برہما کی بیٹی ہے اوسکی فریاد تمنے سنکر
یہ سزا برہما کو دی ۔

اسلوک ۲۳

سولاونیا شنسا دھرت دھنکھ
منہاے ترن وت پراپلشٹنگ
درشٹوا پرمتھن پشپایدھ مپ
یدھسترینگ دیوی یم نرت
دیہاردھگھٹنا دوے تی توامدھا
وت بردمگدھا یوتیہ ۔

ٹیکا ۲۳

ہے مہادیو دیبی جو پاربتی ہین تمکو آدھے انگ
مین بیٹھانے سے یہ جانتی ہین کہ شیوجی کامی

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन स्त्रियों में है सो मुनासिव जा
नती हैं क्योंकि स्त्री जो होती हैं अज्ञा
न होती हैं क्योंकि जो ऐसा उलटा
न जानैं तो उनको अज्ञान कौन
कहै इस वास्ते तुमको जो स्त्री अ-
सक्त जानती हैं सो मुनासिव है
क्योंकि तुमने उनके अगाड़ी
कामदेव को घास की तरह फूंक
दिया और तौभी तुमको जानती
हैं कि ऐसे हैं जवभी तुमको कामी
जानती हैं और कैसा कामदेव है कि
पार्वती की सुंदरता करके शिवजी
के जीतने की इच्छा है जिसकी —
ऐसे कामदेव को तुमने पार्वती के
सन्मुख घास की तरह फूंक दिया
सो यह बात देख कर भी स्त्री तु
म. को अपने वसी भूत जानती हैं
सो जानैं जभी तो अज्ञान कह
लाती हैं ॥ २३ ॥ ॥ मू ॥

स्मशानेष्वाक्रीडा स्मरह
रपिशाचाः सहचराश्चिता
भस्मालेपः स्रगपि नृकरो
टीपरिकरः अमंगल्यं

ہیں استریوں میں ہے سو مناسب جانتی
ہیں کیونکہ استری جو ہوتی ہیں اگیان ہوتی
ہیں کیونکہ جو ایسا اولٹا نہ جانیں تو اونکو
اگیان کون کہے اسواسطے تمکو جو استری
پر آشکت جانتی ہیں سو مناسب ہی کیونکہ
تمنے اونکے اگاڑی کامدیو کو گہاس کی
طرح پھونک دیا اور تو بھی تمکو جانتی ہیں
کہ ایسے ہیں جب بھی تمکو کامی جانتی ہیں
اور کیسا کامدیو ہے کہ پاربتی کی سندرتا
کرکے شیوجی کے جیتنے کی اچھا ہے جسکی
ایسے کامدیو کو تمنے پاربتی کے اگاڑی
گہاس کی طرح پھونک دیا سو یہ بات
دیکھہ کر بھی استری تمکو اپنے بس بھوت
جانتی ہیں سو جانیں جب ہی تو اگیان
کہلاتی ہیں -

اشلوک

۲۴

اشمشانے شوا کریڑا اسمر ہر پشاچا
سہچر اشچتا بھسما لیپا سرگپ
نرک روٹی پرکرہ - امنگلینگ

शीलं तव भवतु नामैवम
खिलं तथापि स्मर्तॄणां व
रद परमं मंगलमसि ।२४।

टी॥ हे महादेव मसान में तो आप
का रहना और पिशाच तुम्हारी फौ-
ज में रहते हैं और चिता भस्म को
लगाते हो और भक्तों के मुंडों
की माला गले में पहिरते हो यह जि-
तना आपका साज है जो देखने में
मंगल नहीं है परंतु जो तुम्हारे ना
म लेने वाले हैं उनको यह साज
परम मंगल होजाता है ॥ २४ ॥

मू॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविध
मविधायात्तमरुतः प्रहृष्य
द्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सं
गितदृशः यदालोक्याह्लाद हृद
इव निमज्यामृतमये दधत्य
न्तस्तत्त्वं किमपि यमिन
स्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥

टी॥ हे महादेव योगीजन मन को
समाधि में लगाकर जौन से तत्व
को देखते हैं वह तत्व तुमही हो यो-
गीजन कैसे हैं कि रोक लिये हैं पवन
जिन्होंने फेर कैसे हैं कि आनन्द के
जल में भीग रहे हैं नेत्र जिन के फेर

شیلنگ تو بھوتا میو کھلنگ
تتھاپی اسمرتری نانگ بردپرمنگ
مسکل مسّی -

ٹیکا

۲۴
ہے مہادیو مسان میں تو آپکا رہنا اور پشاچ
تمہاری فوج میں رہتے ہیں اور چتا بھسم
کو لگاتے ہو اور بھگتوں کے منڈوں کی
مالا گلی میں پہرتے ہو یہ جتنا آپکا ساج ہے
اگرچہ دیکھنے میں منگل نہیں ہے لیکن جو
تمہارے نام لینے والے ہیں اونکو یہ ساج
پرم منگل ہو جاتا ہے - اشلوک

منہ پرتیک چتی سودھ مودھایات
مرتہ پرہرکھ دروما نہ پرمد سللوت
سنگت ورشہ - یدا لوکیا لہاد نگ ہر
ایو منجیا مرتے دھتنگ لتستو نگ کمپ
یم نستت کل بھوان -

ٹیکا

ہے مہادیو جوگی جن من کو سمادھ میں لگاکر
جون سے تت کو دیکھتے ہیں وہ تت تمہی ہو جوگی
جن کیسے ہیں کہ جنہوں نے پون روک لئی ہیں
پھر کیسے ہیں کہ آنند کی جل سی بھیگ رہی ہیں نیتر جنکے

कैसे हैं कि आनंद के समुद्र में
गोता मार रहे हैं ॥ २५ ॥

मू ॥ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्व
मसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु
धरणिरात्मा त्वमिति च
। परिच्छिन्नामेवं त्वयि प
रिणता बिभ्रति गिरं न वि
द्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि
यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥

टी ॥ हे महादेव तुम्हीं तो सूर्य हो
और तुम्ही तो चंद्रमा हो और तु
म्ही पवन हो और तुम्ही अग्नि
हो तुम्ही जल हो और तुम्ही आ
काश हो और तुम्ही पृथ्वी हो
और तुम्ही आत्मा हो यह तुम्हा
री सब मूर्ति हैं और कहने वालों ने य
ह गिनती करके कहा सो कहा करो प
रन्तु मेरी बुद्धि में तो यह आता है कि जो
चीज है और उसमें तुम नहीं हो तो व
ह चीज ही नहीं है अर्थात तात्पर्य यह
कि जितनी चीजें हैं सब तुम्ही हो तुम्हा
रे रूप से जुदी कोई नहीं है ॥ २६ ॥

پھر کیسے ہیں کہ آنند کے سمندر میں غوطہ مار
رہے ہیں۔

اشلوک

٢٦
توم ارکستوم سوم استوم اسی پون استوم
ہت وہ استوم آپستوم
بیوم توم دھرن آتما توم اتی چ
پرچھنا میوم توی پرنتا بھرت
گرم نہ ودم استت تتوم
وییم یہہ ہی یت توم نہ بھوس۔

ٹیکا

٢٦
ہے مہادیو تمھی تو سورج ہو اور تم ہی
چندرماں ہو اور تمھی پون ہو اور تمھی اگن
ہو اور تمھی جل اور تمھی آکاس ہو اور تمھی
پرتھوی ہو اور تمھی آتما ہو یہ سب تمھاری
مورت ہیں خیر کہنے والوں نے یہ گنتی کرکے
کہا سو کہا کریں مگر میری بدھ میں تو یہ آتا
ہے کو جو چیز ہے اور اوسمیں تم نہیں ہو تو وہ
چیز ہی نہیں ہے یعنی مدعا یہ ہے کہ جتنی چیزیں ہیں
سب تمھی ہو تمھارے روپ سے جدی کوئی نہیں ہے

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मू ॥ त्रयींतिस्रोवृत्तीस्त्रि
भुवनमथोत्रीनपिसुरान
काराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिद
धत्तीर्णविकृति तुरीयं
तेधामध्वनिभिरवरुंधा
नमणुभिः समस्तंव्यस्त
त्वांशरणदगृणात्योमि-
ति पदं ॥ २७ ॥ ॥ टी ॥

हेशिव ओंकार जोअक्षर है सोती
नों मात्रा अकार उकार मकार मि
ल कर औरजुदाजुदाभी होकर
तुम्हींको गानता है क्या उन
मात्राओं का अर्थ है कि तीन
तो वेद और तीन वृत्ती अर्था
त् जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति औरती
नों लोक और तीन ही देवता
अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश फेर
कैसा है यह ओंकार कि वारीक
वारीक जो अपनी धुनि है अ
र्थात नाद जोअन्दरशरीरमेंहैउसश
ब्दकरकेतुम्हींहीधामकोकहता
हैऔरफेरकैसाहैकिविकारोंसे
अर्थात मायासे परे है ॥ २७ ॥

اشلوک ۲۷

ترئیں تسرو ورتیس تربھون مہتھو
تریں اپ سُرا انکارادیہیر ورنئے استر
بھربھیددھت تیرن بکرت - ترئیم تے
دھامدھون بھربرنگ دھان منو
بھہ سمستنگ بیستنگ توانگ سرند گرناتیو
مت پدنگ ۔

ٹیکا ۲۷

ہے شیو اونکار جو اچھر ہے سو تینوں ماترا
اکار اُکار مکار ملکر اور جدا جدا بھی ہوکر
تمھی کو گاوتا ہے کیا اون ماترا اونکار کا
ہے کہ تین تو بید اور تین برت یعنی جاگرت
اور سپن اور سکھپت اور تینوں لوک
اور تین ہی دیوتا یعنی برہما بشن مہیش
پھر کیسا ہے یہ اونکار کہ باریک جو اوسکی
دھن ہے یعنی ناد جو شبد سریر میں ہے
اوس شبد کرکے تمھارے ہی دھام کو کہتا
ہے اور پھر کیسا ہے کہ بکاروں سے
یعنی مایا سے پرے ہے ۔

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मू॥ भवःशर्वोरुद्रःपशुप
तिरथोग्रःसहमहांस्तथाभी
मेशानाविति यदभिधाना
ष्टकमिदं अमुष्मिन्प्रत्ये
कंप्रविचरति देवश्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहि
तनमस्योस्मि भवते।२८।

टी॥ हे शिव तुम्हारे जो कहे हुये नाम हैं वह कौन से हैं भव शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महान, भीम, ईशान, ये आठ नाम हैं इनमें हमेशा वेद भी विचरता है अर्थात् गावता है यह जो तुम्हारा धाम है नाम रूपी मैं भी इसको हमेशा नमस्कार करता हूं ॥ २८ ॥

मू॥ नमोनेदिष्ठायप्रियद
वदविष्ठायचनमोनमः क्षो
दिष्ठायस्मरहरमहिष्ठायच
नमः नमोवर्षिष्ठायत्रिन
यनजविष्ठायचनमोनमः
सर्वस्मैतेतदिदमितिशर्वा
यचनमः ॥ २६ ॥ २६ ॥

اشلوک

۲۸
بھو ہ شروو رودر ہ پشو پت رتھوگرہ
سہ مہانگ ستھا بھیم شانا بت
یدبھدھا ناشٹک مدنگ۔ امکھن
پرتیے کنگ پر بچرت دیو شرت
تب پریا یاسمے دھامنے پرن ہت
نمسیو سمہ بھوتے۔

ٹیکا

۲۸
ہے شیو تمہارے جو کہے ہوئے نام ہیں
وہ کون سے ہیں بھو سرب رودر پشوپت
اُگرہ مہان بھیم ایشان یہ آٹھ نام ہیں
ان میں ہمیشہ بید بھی بچرتا ہے یعنی گاتا ہے
یہ جو تمہارا دھام ہے نام روپی میں بھی
ہمیشہ نمسکار کرتا ہوں۔

اشلوک

نمو نید شٹائے پریہ دوبلشٹائے
نمو نمہ کشود شٹائے اسمر ہر مہشٹائے
نمو نمہ۔ نمو برشٹائے ترنین جو
شٹائے نمو نمہ سربسمی تے تدت
مت سربائے نمو نمہ۔

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

टी॥ हेमहादेव तुम्ही तो नजदीक हो और तुम्ही दूर हो तुम्ही सूक्ष्म हो और बडे हो तुम्ही जवान हो तुम्ही बूढे हो अर्थात सब रूप तुम्ही हो तुम को नमस्कार है ॥२९॥ ॥मू॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौभ
वायनमोनमः प्रबलत
मसेतत्संहारेहरायन
मोनमः जनसुखकृते
सत्योत्पत्तौमृडायनमो
नमः प्रमहसिपदेनिस्त्रै
गुरायेशिवायनमोनमः

टी॥ हेमहादेव बहुत सा है रजोगुण तुम को ऐसे जो विश्व के पैदा करने वाले भवरूप हो तुम को नमस्कार है और बड़ा है तमोगुण तुम को ऐसे जो तुम संहार करने वाले हो तुम को नमस्कार है और बहुत सा है सतोगुण जिन को ऐसे जो सुख देने वाले हो तुम को नमस्कार है और बड़ा है स्थान तुम्हारा ऐसे जो तुम

ٹیکا

ہے مہادیو تمھی تو نزدیک ہو اور تمھی دور ہو تمھی سوکشم ہو تمھی بڑے ہو تمھی جوان ہو تمھی بوڑھے ہو یعنی سب روپ تمھی ہو تمکو نمسکار ہے۔

اشلوک

بہل رجسے بشوتپتو بھوایے
نمو نمہ پربل تمسے تت سنگھارے
ہرایے نمو نمہ۔ جن سکھ کرتے
ستوتپتو مرڈایے نمو نمہ پرم
ہس پدے نستری گنے شیوایے
نمو نمہ۔

ٹیکا

ہے مہادیو بہت سا ہے رجوگن تمکو ایسے جو بشو کے پیدا کرنیوالے بھو روپ ہو تمکو نمسکار ہے اور بڑا ہے تموگن تمکو ایسے جو سنگھار کرنیوالے تم ہو تمکو نمسکار ہے اور بہت سا ہے ستوگن تمکو ایسے جو سکھ دینے والے ہو تمکو نمسکار ہے اور بڑا ہے استھان تمھارا ایسے جو تم

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तीनौं गुणों से परे हो तुमको न
मस्कार है ॥ ३० ॥ ॥ मू ॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशव-
श्यंक्वचेदं क्वचतवगुणसी-
मोल्लंघिनीशश्वदृद्धिः ।
इतिचकितममंदीकृत्य
मांभक्तिराधाद्वरदचरण
योस्तेवाक्यपुष्पोपहा-
रं ॥ ३१ ॥ ॥ टी ॥

हे महादेव मेरी जो भक्ति है (वा-
क्य पुष्पोपहारम्) अर्थात् व-
चनरूपी जो पुष्पों की माला है
तुम्हारे चरणों में चढ़ाती भई कि
मेरा दुवला चित्त कहां और शि-
व जी का ऐश्वर्य अर्थात् प्रताप
कहां इस भय में मेरा जो चित्त हैरा
न हो रहा है उसको आनंद अर्थात् सा
वधान करके चढ़ावती भई । ३१ ।

मू ॥ असितगिरिसमंस्या-
त्कज्जलंसिंधुपात्रेसुरतरु
वरशाखालेखनीपत्रमुर्वी

تینون گُنون سے پرے ہو تمکو نمسکار ہے

اشلوک ۳۱

کرش پرنہت چیتہ کلیش بسینگ
کوچیدنگ کوچیتوگن سیمول لنگھنی
ششوردھ - اِت چکیتم مندی
کرتیہ مانگ بھکت رادھادورد
چرنیو ستے باکیہ پشپو پہارنگ -

ٹیکا ۳۱

ہے مہادیو میری جو بھکت ہے باکیہ پشپو
پہارم اَدھات یعنی بچن روپی جو پشپون
کی مالا ہے تمھارے چرنون مین چڑھائی
ہے کہ میرا دبلا چت کہان اور شیوجی
کا ایشورج میعنے پرتاپ کہان اس
بھے مین میرا جو چت حیران ہو رہا ہے اوسکو
آنند یعنی ساودھان کرکے چڑھاتی ہے -

اشلوک ۳۲

اَسِت گرِ سمسیات کجلنگ سندھو
پاترے سرترور ساکھا لیکھنی پتر
مورپی لکھت یدگرہی الوا ساردا

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिखति यदि गृहीत्वा शा-
रदा सर्वकालं तदपि तव
गुणानामीश पारं न या-
ति ॥ ३२॥

टी ॥ हे महादेव जितने काले प-
र्वत हैं वह तो हुये सियाही और
समुद्र हुआ पात्र अर्थात् दवात
और कल्प वृक्ष का टहना हुआ
लेखनी अर्थात् कलम और पृथ्वी
हुई काग़ज़ और सरस्वती आप बै-
ठी लिखने वाली सो कैसी कि तमा-
म दिन और रात लिखती हुई परंतु-
ओर गुणों का अंत नहीं मिला । ३२।

मू ॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चित
स्येंदुमौलेर्ग्रथितगुणमहि-
म्नो निर्गुणस्येश्वरस्य सक
लगुणवरिष्ठः पुष्पदंताभि
धानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तो-
त्रमेतच्चकार ॥ ३३॥

टी ॥ हे महादेव असुर और देवता
और मुनि इन्होंने तुम को पूजा
और तुम्हारी स्तुति की ऐसे जो

سرب کالنگ تدپ توگن
ناعیش پارنگ نجات -

ٹیکا

۳۲
ہے مہا دیو جتنے کالے پربت ہین وہ تو
ہوئے سیاہی اور سمدر ہوا پاتر یعنی دوات
اور کلپ برچھ کا ٹہنا ہوا لیکھنی یعنے قلم
اور پرتھی ہوئی کاغذ اور سرستوتی آپ
بیٹھی لکھنے والی سو کس طرح کہ تمام دن
اور رات لکھنے لگی تو بھی تمھارے گنون
کا انت نہین ملا -

اشلوک

۳۳
اسر سر منیندر ری رچت سیند
مولے گرتھت گن مہمنو نرگنسیے
شور سئیہ سکل گن برشٹہ پشپ
دنتا بھدھا نو رچیر ملگھہ برتیہ
استوترمیے تت چکار -

ٹیکا

۳۳
ہے مہا دیو اسر اور دیوتا اور منن لوگون
نے تمکو پوجا اور تمھاری استت کی ایسے جو

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुम निर्गुण ईश्वर हो तुम्हारे स्तोत्र को बड़े बड़े श्लोकों करके पुष्पदंत करता भया सो कैसा पुष्पदंत है कि सकल गुणों करके शोभा को प्राप्त हो रहा है ॥ ३३

मू॥ अहरहरनवद्यंधूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्याशुद्धचित्तः पुमान्यः सभवति शिवलोके रुद्रतुल्यः सदात्माप्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥ टी॥

हे भक्तो यह जो मैंने शिवजी का स्तोत्र बनाया है सो यह रोज के रोज शिवजी के सुनाने के लायक है जो इसको परम भक्ति करके और शुद्ध चित्त करके पढ़ैगा तो शिव लोक को जायगा और शिव जी खास उसको अपनी बराबर समझैंगे और बहुल धन होगा और जगत में कीर्ति अधिक होगी और देवता लोग उसकी स्तुति करैंगे ॥ ३५

تم نرگن ایشور ہو تمہارے استوتر کو بڑے بڑے اشلوکوں کرکے پشپ دنت کرتا ہوا کیسا پشپ دنت ہے کہ سکل گنوں کرکے سوبھا کو پراپت ہو رہا ہے۔

اشلوک

اَہَر ہَر نَودِینگ دھورجٹیہ اَستوتر
میتت پٹھت پرم بھکتیا سُدھ
چِتہ پومانیہ سنبھوت شیولوکے
رُدر تُلیہ سدا تما پرچرتر دھنایو
پتروان کیرت مانشچ۔

ٹیکا

ہے بھکتو یہ جو مین نے شیوجی کا استوتر بنایا ہے سو یہ روز روز شیوجی کے سنانے کے لائق ہے جو اسکو پرم بھکت کرکے اور سُدھ چت کرکے پڑھیگا تو شیو لوک کو جایگا اور شیوجی خاص اوسکو اپنے برابر سمجھینگے اور بہت دھن ہوگا اور عمر دراز ہوگی اور جگت مین کیرت زیادہ ہوگی اور دیوتا لوگ اوسکی استت کرینگے

मू॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं
होमयज्ञादिकाः क्रियाः
महिम्नःस्तवपाठस्यक
लांनार्हंति षोडशी। ३५।

टी॥ दीक्षा और दान और तप और
तीर्थ और होम और यज्ञ आदि जि
तनी अच्छी बातें हैं सब महिम्न
के सोलहवें हिस्से को भी नहींप्रा
प्त होती हैं ॥३५॥

मू॥ समाप्तोयंसमेस्तोत्रं
सर्वेमीश्वरवर्णनं अनूप
मंमनोहारिसुखंगंधर्व
भाषितं ॥३६॥

टी॥ पुष्पदंत कहते हैं कि जिसमें ई
श्वर का वर्णन है ऐसा मेरा जो स्तो
त्र है सो पूरा हुआ कैसा स्तोत्र है कि
जिसकी बराबरी और स्तोत्र नहीं
कर सक्ता और चित्त का प्रसन्न
करने वाला है ॥३६॥। मू।

महेशान्नापरोदेवो महि
म्नोनापरास्तुतिः अघो
रान्नापरोमंत्रोनास्तितत्वं

اشلوک

۳۵ دکیشا دانںگ تپس تیرتھںگ
ہوم جگیاد کاکریا مہمنہ استو
پاٹھسیہ کلاںگ ناہنت کھوڈشینگ

ٹیکا

۳۵ دکیشا اور دان اور تپ اور تیرتھ اور ہوم
اور جگ آد جتنے اچھی باتین ہین سب
مہمن کے سولھوین حصہ کو بھی نہین پراپت
ہوتی ہین ۔

اشلوک

سماپتوینگ سمستوترنگ سرب
ایشور برننگ - انوپمنگ
منوہاری پوینگ گندھرب بھاکھتنگ

ٹیکا

پشپ دنت کہتے ہین کہ جسمین ایشور کا برنن
ہے ایسا میرا جو استوتر ہے سو پورا ہوا کیسا
استوتر ہے کہ جسکی برابری اور استوتر نہین
کر سکتے اور دل کا خوش کرنے والا ہے ،

اشلوک

مہیشاننا پرو دیو مہمنو ناپرو ستتہ
اگھوراننا پرو منترو ناستت تونگ

गुरोः परम्॥ ३७ ॥

टी॥ शिव से परे और देव नहीं है और महिम्न से परे और स्तुति नहीं है और अघोर मंत्र से परे और मंत्र नहीं है और गुरू से परे और तत्त्व नहीं है ॥ ३७ ॥

मू॥ कुसुमदशननामा सर्वगंधर्वराजः शशधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः स्वगुरुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ३८ ॥

टी॥ पुष्पदंत जो है सब गंधर्वों का राजा और शिव जी का दास अपने गुरू की महिमा से क्रोध करके भ्रष्ट हो गया था सो इस महिम्न के बनाने से शिव जी ने उसको दुख से बाहिर किया और उसके भ्रष्टपने को दूर किया और सब तरह के दोषों से उसका उद्धार कर दिया ॥ ३८ ॥

گرو پرنگ -

ٹیکا

۳۷

شیو سے پرے اور دیو نہیں ہے مہمن سے پرے اور استت نہیں ہے اگھور منتر سے پرے اور منتر نہیں ہے اور گرو سے پرے اور تت نہیں ہے

اشلوک

۳۸

کسم دشن ناما سرب گندھرب راجہ ششدھر برمولے دیو دیوسیہ داسہ - سوگرنج مہمنو بھرشٹ ایواسیہ روکھات استون مدمکارکھی دبیہ دبیہ مہمنہ -

ٹیکا

۳۸

پشپ دنت جو ہے سب گندھربوں کا راجہ اور شیوجی کا داس اپنے گرو کی مہما سے کرودھ کرکے بھرشٹ ہوگیا تھا سو اس مہمن کے بنانے سے شیوجی نے اوسکو دکھ سے باہر کیا اور اوسکے بھرشٹ پنے کو دور کیا اور سب طرح کے دکھوں سے اوسکو اودھار کردیا -

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मू ॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमो
क्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः
प्रांजलिर्नान्यचेताः व्रज-
ति शिव समीपं किन्नरैः स्तू
यमानः स्तवनमिदममो-
घं पुष्पदंतप्रणीतं । ३९ ।

टी ॥ जो इस स्तोत्र को रोज़ रोज़ हा-
थ जोड़ के और शिवजी में चित्त
लगाय के पाठ करैगा वह शिवजी
के विकट जायगा और देवता उस
की स्तुति करैंगे कैसा स्तोत्र है म-
हिम्न कि जलदी फल का देने वा-
ला पुष्पदंत का बनाया हुआ है ३९

मू ॥ श्री पुष्पदंत मुखपंक
जनिर्गतेन स्तोत्रेण कि-
ल्बिषहरेण हरप्रियेण कं-
ठस्थितेन पठितेन समाहि
तेन सुप्रीणितो भवति भू-
तपतिर्महेशः ॥ ४० ॥

टी ॥ जो यह स्तोत्र कंठ हो तो महा-
देवजी प्रसन्न होते हैं कैसा स्तो-
त्र है कि पापों का हरने वाला है

اشلوک

٣٩
سُرورمُن پوجینگ سورگ موکشیک
ہیتنگ پٹھت یدی منکھیہ پرانجلر
نانیہ چیتہ برجت شیو سمیپنگ کنر
استویمانہ استون مدممو گھنگ
پشپ ونتنگ پرنیتنگ -

ٹیکا

٣٩
جو اس استوتر کو روز روز ہاتھ جوڑ کے اور
شیوجی میں چت لگا کر پاٹھ کریگا وہ شیوجی
پاس جایگا اور دیوتا اوسکی استت
کرینگے یہ مہمن استوتر کیسا ہے کہ جلد پھل کا
دینے والا پشپ دنت کا بنایا ہوا ہے -

اشلوک

٤٠
سری پشپ دنت مکھ پنکج نرگتن
استوترین کل بکھہ ہرین ہرپرین
کنٹھ استھتین پٹھتین سماہتین سو
پریتو بھوت بھوتر مہیسہ -

ٹیکا

٤٠
جو یہ استوتر کنٹھ ہو تو مہادیوجی پرسن

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और शिवजी को प्यारा है और पुष्पदंत के मुख कमल से निकला हुआ है ॥ ४ ॥

इतिश्रीपुष्पदंताचार्य विरचितंमहिम्नाख्यंस्तोत्रंसमाप्तम् ॥ सं१९३६।

चौपाई

करि जिज्ञासा कुन्दन लाल ।
हरिवंश लाल पंडित किरपाल
संवत उन्निस सै तेईसा ॥✢॥
भाषा स्तुति करी गिरीशा ✢ ॥

ہوتے ہیں کیسا استوتر ہے کہ پاپوں کا ہرنے والا ہے اور شوجی کو پیارا ہے اور پشپ دنت کے مکھ کمل سے نکلا ہوا ہے —

اِت سِری پشپ دنتا چاریہ برچتنگ مہمناکھیہ استوتر سماپتم

چوپائی

کر جگیاسا کندن لال ✢✢
ہرنبس لال پنڈت کرپال ✢
سمت اونیس سے تیئسا ✢
بھاکھا استت کری گریسا

SPS
891.238 P 97 M
6318

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri